113 सूरह फलक. (मजामीन)

114 सूरह नास. (मजामीन)

खुलासा मज़ामीने कुरान उर्दू किताब. मौलाना मलिक अब्दुर्रउफ.
नोट.- ये PDF कोई भाषा या व्याकरण नही हे,
बल्कि दीन-ए-इस्लाम को समझने के लिये हे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम.

सूरह अल फलक और सूरह अन नास आखरी दोनो सूरते मुअव्वज़तैन केहलाती हे.
दोनो सूरतो मे शैतान के शर से बचने और अल्लाह की पनाह मे आने की नसीहत की गई हे.

113 सूरह फलक.

» इस सूरह मे जिस्मानी खतरो से पनाह लेने की तालीम दी गई हे.
हुज़ूरﷺ से फरमाया गया के आप यू कहा करे के मे फजर के रब की पनाह मे आता हू, उस्की तमाम मखलुकत के शर (बुराई) से, हर तरफ छाई हुई रात की अंधेरी के शर से, और गाठो पर दम करने के जरीये जादू करने वाली औरतो के शर से, और हसद करने वालो के शर से अल्लाह की पनाह मे आता हू.

114 सूरह नास.

» रूहानी खतरो से बचकर अल्लाह तआला की पनाह मे आने की नसीहत.
अल्लाह ताला का इरशाद हे ए नबी! आप कह दीजिये मे लोगो के

रब, लोगो के माबूद, लोगो के बादशाह की पनाह मे आता हू. हर वसवसा डालने वाले की बुराई से, जिन्के वसवसो के असरात डायरेक्ट लोगो के दिल-व-दिमाग पर होते हे, ये वसवसा डालने वाले जिन्नात मेसे भी हे और इन्सानो मेसे भी हे.

सूरह नास के फवाइद.

• सूरह ए नास मे सिर्फ शैतान से पनाह चाही गई, लेकिन अल्लाह तआला से जिन्की पनाह तलब की गई हे उन्की तीन सिफते बयान की गई.-
(1) रब. (2) मालिक व हाकिम. (3) माबूद.
क्युकी मुशरिक कौमो इन तीन ही सफतो के अन्दर अल्लाह तआला के साथ दूसरो को शरीक ठेहराती थी, इस्लीये इन तीनो सिफतो को बयान करके उस शक व शुबह को खत्म कर दिया के इन्मे से किसी चीज़ मे अल्लाह तआला के साथ कोई शरीक नही.

• और शैतान की जिस खास खराबी का जिक्र किया हे वो वसवसा डालना हे, क्युकी हर बुरे काम ओर जुर्म की शुरुआत वसवसे से होती हे, इस्लीये उस्से भी पनाह चाही गई.

• और शैतान को खन्नास भी कहा गया यानी नज़र ना आने वाला या पीछे हट जाने वाला, इस्लीये के शैतान या शैतानी काम करने वाले लोग सामने आकर गुमराह करने वाली बात नही करते, बल्कि पीछे रेहकर गुमराह करते हे, जैसा के हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रदी) और हज़रत अनस (रदी) से रिवायत हे वो फरमाते हे कि

शैतान इन्सान को गफलत की हालत मे वसवसे पैदा करता हे, अगर इन्सान अल्लाह को याद कर लेता हे तो पीछे हट जाता हे. (कुर्तुबी 20/262)

• आयत नंबर 6 मे ये बात भी साफ करदी हे कि वसवसा पैदा करने वाले जिन्नात तो होते ही हे, इन्सान भी होते हे, इन्को शैतान अपना टूल और औजार बनाता हे, आजकल इल्म के नाम पर जो गुमराहीया फैलाई जा रही हे - मिसाल के तौर पर सूद (वियाज) को कारोबार के निजाम की मजबूती के लिए जरूरी करार देना, हमजिन्स परस्ती (गे) के अमल को सही करार देना, सट्टे को इंटरनेशनल लेवल पर फैलाना, शरीयत के हुकमो को बेकार और निकम्मा बताना, ये सब इन्सानी वसवसो की किस्मे हे, जिन्का फितना आजकल पूरी दुनिया मे फैलाया जा रहा हे.

मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी.